ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-11* February- 2019
Anthology : The Research

# हिन्दी आलोचना में डा. रामचन्द्र तिवारी का योगदान

**विभा मेहरोत्रा**
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
डी0बी0एस0 पी0जी0
महाविद्यालय,
कानपुर

**सारांश**

आलोचना साहित्यिक निधि की रक्षा करती है, गहन विश्लेषण एवं ईमानदारी से रचना के अन्तःकरण का अनुसंधान करती है, तथा उसके अनुभव को पाठक तक सम्प्रेषित करती है। हिन्दी गद्य की विधाओं में आलोचना की समृद्ध परम्परा रही है। आलोचक के दायित्व उसकी मान्यताएं उसकी समीक्षा के सैद्धान्तिक आधार भी साहित्य में अध्ययन के विषय रहे हैं क्योंकि आलोचक आलोचना की प्रक्रिया में पूर्व स्वीकृत प्रतिमानों के अतिरिक्त अपनी धारणाओं मान्यताओं एवं आदर्शो के अनुरूप नये प्रतिमान भी निश्चित करना है। इसलिए आलोचना में आलोचक का व्यक्तित्व भी प्रतिबिम्ब होता है। इस परिप्रेक्ष्य में किसी समकालीन लेखक का हिन्दी आलोचना में योगदान का अनुसंधान करना अत्यन्त ही संवेदनशील कार्य हो जाता है।

**मुख्य शब्द :** डा0 रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी आलोचना।

**प्रस्तावना**

डा0 रामचन्द्र तिवारी का लेखन काल लगभग 55 वर्षो का है, जिसमें उन्होंने भक्तिकालीन महाकवियों से लेकर समकालीन साहित्यकारों एवं आलोचकों तक अपनी लेखनी चलाई है। इसके अतिरिक्त योग के विविध आयामों तथा हिन्दी साहित्य के विकास को प्रभावित करने वाले सम्प्रदायों पर भी स्वतंत्र लेखन किया है। डा0 रामचन्द्र तिवारी कर 28 से ज्यादा कृतियाँ प्रकाशित है। जिनमें अधिकांश निबन्ध एवं आलोचना से सम्बन्धित है। इन कृतियों के विहंगम अवलोकन से ही स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने हिन्दी साहित्य का गहन अध्ययन अनुशीलन अपनी विलक्षण प्रतिभा के माध्यम से किया है, तथा अपने आलोचनात्मक प्रतिमाह निश्चित किये हैं।

सन् 1953 में डा0 रामचन्द्र तिवारी की प्रथम कृति ''रीतिकालीन हिन्दी कविता और सेनापति'' प्रकाशित हुई एवं सन् 1995 में इनका प्रसिद्ध इतिहास ग्रन्थस हिन्दी का गद्य साहित्य जिसे डा0 रामदरश मिश्र ने हिन्दी के गद्य साहित्य का प्रामाणिक दस्तावेज कहा है, प्रकाशित हुआ। वास्तव में जैसा कि डा0 राम दरश मिश्र ने लिखा है यह इतिहास ग्रन्थ हिन्दी गद्य साहित्य का इतिहास भी है और मूल्यांकन भी। इसमें डा0 रामचन्द्र तिवारी ने भारतेन्दु पूर्व से लेकर समकालीन हिन्दी गद्य के विकास को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया है, तथा हिन्दी गद्य की सभी विधाओं की सभी महत्वपूर्ण रचनाओं का संक्षिप्त सारगर्भित विवेचन किया है। अपने विस्तृत लेखनकाल के प्रारम्भ में ही प्रकाशित इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण ही उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत हुआ। इसके अतिरिक्त इनकी अनेक कृतियाँ उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा पुरस्कृत हुई हैं। वर्ष 2004 में इन्हें उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा ''हिन्दी गौरव सम्मान'' भी प्राप्त हुआ है।

''हिन्दी आलोचना समकालीन परिदृश्य'' में आलोचक के दायित्व एवं क्षमता पर विचार करते हुए कृष्णदत्त पालीवाल जी लिखते हैं कि – ''आलोचक वहीं है जिसके पास तीसरी आँख है। यह आँख साहित्य की परम्परा या इतिहास बोध से प्राप्त होती है, रचना से प्राप्त होती है, जो उसे अन्धेपन से बचाती है।'' इसी सन्दर्भ में उन्होंने यह भी लिखा है कि – ''आलोचक का काम रचना के अनुभव को पाठक तक पहुंचाना परोसना है।'' डा0 रामचन्द्र तिवारी का परम्परा बोध उन्हें ''मध्ययुगीन काव्य साधना (1962 ई0)'' से जोड़ता है, साथ ही ''आलोचक का दायित्व (1981 ई0) में वह आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी से लेकर डा0 नामवर सिंह तक की आलोचनात्मक दृष्टि, समीक्षा सिद्धान्तों उनके प्रतिमानों

का विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। जिससे उनकी तीक्ष्ण आलोचनात्मक दृष्टि, का प्रत्यक्षीकरण तो होता ही है, साथ ही पाठक में भी आलोचनात्मक दृष्टि एवं समझ उत्पन्न होती है।

यह भी विचारणीय है कि डा0 रामचन्द्र तिवारी की आलोचना पद्धति किसी विचारधारा पूर्व निर्धारित साहित्यिक प्रतिमानों के दायरे में बँधी हुई नही है। इन्होंने हिन्दी भाषा एवं साहित्य के उद्भव एवं विकास से लेकर, नाथ, पंथ, शिवनारायणी, सम्प्रदाय, योग, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य शास्त्र, संत साहित्य पर अपने मौखिक अध्ययन अपने लेखनकाल के प्रारम्भिक दौर में ही प्रस्तुत किये हैं। इनकी मौलिक एवं अनुदित कृतियों के विहंगम अवलोकन से ही स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने समस्त हिन्दी साहित्य, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का अध्ययन अनुशीलन अपनी विलक्षण प्रतिभा के माध्यम से किया है, एवं अपने आलोचनात्मक प्रतिमान निश्चित किये हैं।

वास्तव में किसी भी आलोचनात्मक मान को कृति या आलोच्य पर चस्पा न करना ही आलोचना की सर्वप्रथम विशेषता है। श्रेष्ठ आलोचक कभी अपनी साहित्यिक परम्परा से अलग नहीं होता वह आलोच्य लेखकों कवियों की संवेदना का अध्ययन एवं कृतियों का पुर्नलेखन या पुर्नगाठ करके साहित्यिक विरासत की रक्षा करता है, तथा उसके अनुभव को समकालीन परिप्रेक्ष्य में पाठकों तक प्रेषित करता है। ''आधुनिक हिन्दी साहित्य विविध आयाम (2007 ई0)'' में डा0 तिवारी ने परम्परा, इतिहास, पत्रकारिता, राष्ट्रीयता, रस सिद्धान्त एवं आलोचना के प्रतिमानों पर विचार व्यक्त किये है' तथा ''कृति चिन्तन और मूल्यांकन संदर्भ (2005 ई0)'' में भी अपनी आलोचनात्मक मान्यताओं को स्पष्ट किया है जिनके विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इन्होंने हिन्दी आलोचना के स्थापित प्रतिमानों रसवाद, मार्क्सवाद या ऐतिहासिक आलोचना, मनोविश्लेषणवादी आलोचना का अध्ययन अनुशीलन विश्लेषण तो किया है तथापि इनसे तटस्थ रहकर कृति व आलोच्य को उसके युग की मनोभूमि से जोड़कर उसके प्रभाव का विश्लेषण मूल्यांकन किया है, उदाहरणस्वरूप आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की सीमाओं को तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों एवं हिन्दी गद्य के विकास के परिप्रेक्ष्य में देखते हुए लिखते हैं–'' निश्चय ही द्विवेदी युग हिन्दी गद्य के परिष्कार का युग था और इसके लिए जिस संयम और सुरुचि की आवश्यकता थी, वह द्विवेदी जी में पुंजीभूत थी। चाहे वे गंभीर आलोचना व प्रस्तुत कर सके हों, चाहे उनके निबन्ध बातों के संग्रह मात्र हों चाहें उनकी नीतिमत्ता ने रसात्मकता की सरसता को सिकता में बदल दिया हो, किन्तु यह स्वीकार करना होगा कि उन्होंने हिन्दी गद्य को मर्यादा दी, हिन्दी भाषा को परिमार्जित किया और नवीन प्रयोगों को हिन्दी साहित्य में सम्भव बनाया। इससे भी बड़ी बात उन्होंने साहित्य के केन्द्र में नवीन प्रगतिशील सामाजिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करके किया।'' इसी प्रकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की आलोचना पद्धति की सीमाओं पर विचार करते हुए लिखते हैं – ''प्रत्येक विचारक अपने समय की सीमा के भीतर ही' अपने अनुभव संसार के अन्तर्गत ही अपनी चिन्तन पद्धति का विकास करता है, आचार्य शुक्ल तो अपने समय की विश्वस्तर की चिन्तनधारा के साथ चल रहे थे। अपने समय ें जितने दार्शनिकों और साहित्यमर्मज्ञों का अध्ययन आचार्य शुक्ल ने किया था आज विश्व स्तर पर उस कोटि के कितने दार्शनिकों के विचारों से हिन्दी साहित्य का नेतृत्व करने वाले साहित्यकारों का परिचय है।''

स्पष्ट है कि आलोच्य को युग की मनोभूमि से जोड़कर ही उसका विश्लेषण मूल्यांकन डा0 रामचन्द्र तिवारी को मान्य है, यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि समकालीन आलोचकों की यह मान्यता है कि हिन्दी आलोचना अपने विकास की प्रक्रिया में अनेक प्रतिबद्धताओं, पाश्चात विचारधाराओं एवं आरोपित प्रतिमानों में उलझी रही है तथा युग की मनोभूमि से रचना को जोड़कर उसके प्रभाव का विश्लेषण मूल्यांकन का अभाव रहा है। फ्रायडावाद, मार्क्सवाद यहाँ तक कि मात्र रसवाद के प्रतिमानों से ही किसी रचना की सर्वांगीण आलोचना नहीं हो सकती। समकालीन आलोचनात्मक परिदृश्य में पत्र पत्रिकाओं, संगोष्ठियों अनेक माध्यमों से इस पर गंभीर बहस जारी है, यहाँ तक की नयी समीक्षा के औजार भी लघु कविताओं के विश्लेषण में ही सफल हुए प्रबन्ध काव्यों, नाटकों, कथा कृतियों की समीक्षा के लिए वे उपयोगी सिद्ध नहीं हुए। समकालीन आलोचना के समर्थ आलोचक विजय देव नारायण साही के अनुसार हिन्दी आलोचना के पिछड़ने एवं दयनीय स्थिति का सर्वप्रथम कारण युग की मनोभूमि से रचना को जोड़कर उसकी प्रभाव, विश्लेषण, मूल्यांकन का अभाव रहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (1985 ई0), तुलसीदास (1997 ई0) प्रताप नारायण मिश्र (1992 ई0) सरदार पूर्ण सिंह (1998 ई0) डा0 रामचन्द्र तिवारी की महत्वपूर्ण कृतियाँ हैं जिसमें हिन्दी साहित्य के युग प्रर्वतक साहित्यकारों का विवेचन विश्लेषण युगीन परिप्रेक्ष्य में किया गया है। ''हिन्दी आलोचना शिखरों का साक्षात्कार (1996ई0)'' अन्य महत्वपूर्ण कृति हैं जिसमें आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नन्ददुलारे बापजेयी, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डा0 नगेन्द्र, डा0 रामविलास शर्मा तथा मुक्तिबोध का संक्षिप्त तथ्यपरक एवं सारगर्भित विवेचन पाठक को प्राप्त होता है, जिसमें आलोचनात्मक एवं शोधपरक दृष्टि विकसित होती है।

''हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास'' लिखते हुए श्री बच्चन सिंह लिखते हैं कि ''आरम्भ में ही कह दूँ कि न तो आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के हिन्दी साहित्य का इतिहास को लेकर दूसरा नया इतिहास लिखा जा सकता है और न उसे छोड़कर''। यह तथ्य हिन्छी आलोचना के परिप्रेक्ष्य में भी अक्षरशः सत्य है, समकालीन आलोचना तक के अधिकांश संदर्भो के सूत्र आचार्य शुक्ल की समीक्षा पद्धति से जुड़ते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (1985ई0), आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचनाकोश (1986ई0) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (2005 ई0) तथा श्रेष्ठ निबन्ध आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (1980ई0) डा0 रामचन्द्र तिवारी की आचार्य शुक्ल पर आधारित श्रेष्ठ कृतियाँ हैं, जो उन पर आचार्य शुक्ल के विशद् प्रभाव को प्रदर्शित करती है। आचार्य शुक्ल की आलोचना पद्धति का विवेचन करते हुए इन्होंने लिखा है कि –''आज भी हिन्दी आलोचना का ऐसा कोई संदर्भ नहीं है, जिसके सूत्र आचार्य शुक्ल की समीक्षा में विद्यमान न हों। उनकी चर्चा के बिना हम किसी भी सूत्र को विकसित नहीं कर पाते, उनकी समीक्षा दृष्टि की विशदता, गहनता, सूक्ष्मता और संतुलन का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है। आचार्य शुक्ल की समीक्षा में पूर्ववर्ती समीक्षा के सारे उत्कृष्ट और ग्राह्य तत्व अन्तर्भुक्त है, और परवर्ती समीक्षा की अनेक सम्भावनाएँ समाविष्ट है। वे सच्चे अर्थो में हिन्दी के पथिकृत आचार्य है।''

सामंजस्य एवं समन्वय की प्रवृत्ति किसी भी साहित्य को गति प्रदान करने वाली होती है। वास्तव में साहित्य विभिन्न विचारधाराओं में विकसित होता है। कभी ये मान्यतायें साहित्य को अलग–अलग कालखण्डों में विभिन्न वादों के रूप में प्रभावित करती है, कभी एक ही कालखण्ड में एक दूसरे को प्रभावित एवं तर्क–वितर्क करते हुए विकसित होती है। आलोचक का दायित्व होता है कि वह इन पर निष्पक्ष दृष्टि से विचार करे। वादग्रस्त आलोचना पद्धतियों में कोई किसी भी प्रशास्ति एवं गुणगान करता है, कोई अपने प्रतिमानों के अनुसार आलोचना के लिए किसी का चयन करता है। उदाहरण के लिए हिन्दी साहित्य में मोटे तौर पर यह मान लिया गया है कि मध्यकाल में तुलसीदास एवं कबीर अलग–अलग विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में डा0 रामचन्द्र तिवारी लिखते हैं कि– ''तुलसीदास पूरे भारतीय समाज की आन्तरिक बनावट को देखते हुए पर्याप्त उदार हैं। उन्होंने आगे बढ़कर निम्नवर्गीय जनता को गले लगाया है, किन्तु कबीर ने दूर खड़े होकर उच्चवर्ग को चुनौती दी है। कबीर भी कर्मफल और पुनर्जन्म के सिद्धान्तों का अतिक्रमण नहीं कर सके हैं। मानव मात्र की एकता का प्रतिपादन उन्होंने पूरे शक्ति के साथ किया है, किन्तु मनुष्य की पूर्ण स्वतन्त्रता का उद्घोष वे नहीं कर सके हैं। उनके यहाँ भी नियामक ईश्वर ही हैं, मनुष्य नहीं तुलसी और कबीर दोनों मनुष्य की नियति के निदर्शन में एक दूसरे के बहुत निकट हैं दोनों के संस्कार उनमें दूरी उत्पन्न करते हैं। यदि दोनों ने अपने को संस्कार जनित सीमाओं से थोड़ा मुक्त कर लिया होता तो उत्तर भारत में भी निर्गुण और सगुण का वैसे ही समन्वय हो गया होता जैसे महाराष्ट्र और गुजरात में हो गया था''।

**निष्कर्ष**

निष्कर्षतः अनेक दृष्टियों से विचार करने पर डा0 रामचन्द्र तिवारी समकालीन हिन्दी आलोचना के श्रेष्ठ आलोचक सिद्ध होते हैं। अपने विस्तृत लेखनकाल में उन्होंने सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य को प्रभावित किया है। उनका साहित्य वर्तमान परिप्रेक्ष्य में शोध का विषय का तो है ही, उसके अध्ययन से पाठक में तीक्ष्ण शोधपरक एवं आलोचनात्मक दृष्टि का विकास होता हुआ दिखता है। हिन्दी आलोचना उनका अत्यन्त ही महत्वपूर्ण योगदान परिलक्षित होता है।

**संदर्भ ग्रन्थ सूची**

1. *तिवारी डॉ0 रामचन्द्र, आधुनिक हिन्दी साहित्य विविध आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007*
2. *तिवारी, डॉ0 रामचन्द्र, हिन्दी आलोचना शिखरों के साक्षात्कार विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1996*
3. *तिवारी, डॉ0 रामचन्द्र, आधुनिक हिन्दी आलोचना संदर्भ और दृष्टि, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1997*
4. *तिवारी, डॉ0 रामचन्द्र, कृति चिन्तन एवं मूल्यांकन संदर्भ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2005*
5. *तिवारी, डॉ0 रामचन्द्र, हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना संदर्भ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2004*
6. *तिवारी, डॉ0 रामचन्द्र, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2000*
7. *तिवारी, डॉ0 रामचन्द्र, रामचन्द्र शुक्ल, आलोचना कोश, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1985*
8. *तिवारी, डॉ0 रामचन्द्र, हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2004*
9. *पालीवाल, कृष्णदत्त, हिन्दी आलोचना समकालीन परिदृश्य, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, 2014*
10. *पालीवाल, कृष्णदत्त, हिन्दी आलोचना के नये वैचारिक सरोकर, सामयिक बुक्स, नई दिल्ली, 2014*
11. *सिंह बच्चन आधुनिक हिन्दी आलोचना के बीच शब्द, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015*